रणजीत टाइम्स

इंदौर

बुधवार, 3 दिसम्बर, 2025

वर्ष 01 | अंक 300 | कुल पृष्ठ : 8 | Digital

RNI-NO.MPHIN/2015/64585

प्रधान संपादक : गोपाल गावंडे

नागरिक आपूर्ति निगम पर 63 हजार करोड़ का कर्ज

विधानसभा में उठा बड़ा सवाल, रोज 14 करोड़ ब्याज का बोझ, वेयरहाउस में सड़ रहा धान

भोपाल। नागरिक आपूर्ति निगम पर 63 हजार करोड़ रुपए का कर्ज है और इसके लिए सरकार को रोज 14 करोड़ 17 लाख रुपए ब्याज चुकाना पड़ रहा है। यह राशि अगर एक दिन लेट होती है तो सरकार को ब्याज पर ब्याज भी चुकाना पड़ता है। उधर रीवा जिले के सिरमौर विधानसभा क्षेत्र में 939 मीट्रिक टन धान गोदाम में रखे हुए सड़ गया और यह बीमारी व महामारी की वजह बन रहा है। सरकार ने इसे छत्तीसगढ़ की कम्पनी को बेचा है पर खराब हो चुके धान को नहीं ले जा रही है। इसके चलते सरकार को करोड़ों का नुकसान हुआ है। विधायक सुशील कुमार तिवारी ने खाद्य मंत्री से सवाल किया था कि क्या मप्र नागरिक आपूर्ति निगम 77 सौ करोड़ के कर्ज में है। क्या कर्ज पर 11 करोड़ रुपए रोज ब्याज की दर से लगभग 330 करोड़ रुपए ब्याज प्रतिमाह देय होता है, जिसकी भरपाई की जा रही है या

नहीं की जा रही। क्या गलत प्रबंधन के कारण वित्तीय संकट उत्पन्न हुआ है। यदि नहीं, तो क्या कारण है और इस वित्तीय संकट के लिये कौन दोषी है। खाद्य मंत्री गोविंद सिंह राजपूत ने कहा कि वर्तमान में बैंकों से उधार राशि रुपए 62944.71 करोड़ है।

● **छग की कम्पनी नहीं ले जा रही 939 मीट्रिक टन सड़ा धान-** विधायक दिव्यराज सिंह ने विधानसभा में सवाल पूछा कि सिरमौर के उमरी गांव वाले वेयरहाउस में क्या पिछले एक साल से खराब अनाज पड़ा हुआ है। अगर हां, तो फिर विभाग ने इस सड़े हुए अनाज को अभी तक हटाया क्यों नहीं। उन्होंने कहा कि अनाज की बदबू पूरे इलाके में फैल रही है। अगर इससे कोई बीमारी या महामारी फैलती है, तो इसकी जिम्मेदारी कौन लेगा। उन्होंने यह भी पूछा कि आखिर यह सड़ा हुआ अनाज कब तक हटाया जाएगा। मंत्री गोविंद सिंह राजपूत ने अपने जवाब में माना कि उमरी वेयरहाउस में एक साल से खराब धान पड़ी हुई है। वर्ष 2020-21 में खरीदी गई धान की मिलिंग फरवरी 2022 तक करानी थी।

विधानसभा भवन में हुई एमपी कैबिनेट की बैठक

नगरीय क्षेत्र अधोसंरचनात्मक योजना में 500 करोड़ रुपए अतिरिक्त स्वीकृत

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में मंगलवार को विधानसभा के समिति कक्ष में मंत्रि-परिषद की बैठक हुई।

बैठक में नगरीय निकायों के विकास कार्यों के लिए योजना को 2026-27 तक निरंतर जारी रखने और अतिरिक्त 500 करोड़ रुपए स्वीकृत करने की मंजूरी दी गई। वर्तमान में प्रदेश में इस योजना के तहत 1,062 परियोजनाएं, कुल 1,070 करोड़ रुपए की स्वीकृत राशि के साथ चल रही हैं। 325 परियोजनाएं पूर्ण हो चुकी हैं। 407 परियोजनाओं पर काम हो रहा हैं। बाकी 330 परियोजनाएं स्वीकृति/निविदा प्रक्रिया में हैं। इस योजना के तहत नगरीय क्षेत्र में पेयजल व्यवस्था, सफाई, स्ट्रीट लाइट, मार्ग निर्माण, नाली निर्माण, श्मशान घाट, सामुदायिक भवन, रैन बसेरा और खेल मैदान विकास जैसे अधोसंरचनात्मक विकास कार्य किए जाते हैं।

मध्यप्रदेश ग्रामीण संपर्कता बाह्य वित पोषित योजना

बाकी अधूरे कामों को पूरा करने के लिए पूर्व में स्वीकृत 12 करोड़ 32 लाख रुपए के अतिरिक्त 9 करोड़ 45 लाख रुपए खर्च करने की अनुमति दी गई। मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित राज्य सेवा परीक्षा 2022 में परिवहन उप निरीक्षक के पद के लिए चयनित 29 उम्मीदवारों में से 25 उम्मीदवारों को नियुक्ति प्रदान करने का निर्णय लिया गया। विभागीय भर्ती नियम के अनुसार एक वर्षीय कंप्यूटर डिप्लोमा और ड्राइविंग लाइसेंस की अहर्ता दस्तावेज 2 वर्ष की परिवीक्षा अवधि में जमा करना अनिवार्य होगा। यदि किसी उम्मीदवार ने परिवीक्षा अवधि में आवश्यक दस्तावेज प्रस्तुत नहीं किए, तो उनकी सेवा तुरंत समाप्त कर दी जाएगी, बिना परिवीक्षा अवधि बढ़ाए।

डिलीट कर सकते हैं संचार साथी ऐप, रखना भी जरूरी नहीं

सरकार का बड़ा ऐलान, विवाद के बीच संचार मंत्री की सफाई

नई दिल्ली (एजेंसी)। संचार साथी ऐप को लेकर जारी विवाद के बीच सरकार ने कहा है कि इसे फोन में रखना जरूरी नहीं है। साथ ही यूजर इसे डिलीट भी कर सकते हैं। केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने मंगलवार को यह जानकारी दी है। दूरसंचार विभाग ने नवंबर में निर्देश जारी किया था कि भारत में इस्तेमाल हो रहे फोन में संचार साथी ऐप अनिवार्य होगा। विपक्ष ने इस ऐप के जरिए जासूसी के आरोप लगाए हैं।

सिंधिया ने कहा, इसके आधार पर न कोई जासूसी है, न कोई कॉल मॉनीटरिंग है। अगर आप चाहते हैं, तो इसे एक्टिवेट करें। अगर आप नहीं चाहते, तो इसे एक्टिवेट मत करो। अगर आप इसे अपने

फोन में रखना चाहते हैं, तो रखो। अगर आप इसको डिलीट करना चाहते हो, तो डिलीट करो...। अगर आपको संचार साथी इस्तेमाल नहीं करना है, तो डिलीट कर दो। इसे डिलीट कर सकते हैं, कोई परेशानी नहीं है। उन्होंने कहा, यह उपभोक्ता की सुरक्षा की बात है...। आपको डिलीट करना है, तो डिलीट कर दोगे आप। कोई अनिवार्य नहीं है। अगर आप इस ऐप का उपयोग नहीं करना चाहते, तो इस पर रजिस्टर मत करो। पर हर व्यक्ति को देश में नहीं मालूम कि चोरी से बचाने, फ्रॉड से बचाने के लिए यह ऐप है। हर व्यक्ति तक यह ऐप पहुंचाना हमारी जिम्मेदारी है। अगर आपको डिलीट करना है, तो आप डिलीट कर दो। नहीं इस्तेमाल करना तो रजिस्टर मत करो।

प्रियंका बोलीं-

सरकार जासूसी करना चाहती है

सभी मोबाइल फोन में साइबर सिक्योरिटी एप संचार साथी को प्री-इंस्टॉल करने के दूरसंचार विभाग के आदेश पर विवाद बढ़ने के बाद मंगलवार को केंद्र सरकार की सफाई आई। केंद्रीय संचार मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कहा कि ये

कंपलसरी नहीं है। चाहे तो यूजर इसे डिलीट कर सकते हैं। केंद्र सरकार ने एक दिसंबर को स्मार्टफोन कंपनियों को आदेश दिया था कि वे स्मार्टफोन में सरकारी साइबर सेफ्टी एप को पहले से इंस्टॉल करके बेचें। इसके लिए 90 दिन का समय दिया था। इस फैसले का कांग्रेस समेत विपक्षी पार्टियों ने विरोध किया। कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी ने कहा कि यह कदम लोगों की प्राइवेसी पर सीधा हमला है। यह एक जासूसी एप है।

समंदर में हावी नौसेना, पोर्ट पर ही दुबके रहे पाकिस्तानी

ऑपरेशन सिंदूर पर बोले नेवी चीफ, बताया आगे का प्लान

नई दिल्ली (एजेंसी)। ऑपरेशन सिंदूर के बाद से पाकिस्तान अंतरराष्ट्रीय मंचों पर जिस तरह बौखलाया नजर आता है उससे उसकी सेना का खौफ साफ नजर आता है। भारतीय नौसेना प्रमुख एडमिरल दिनेश त्रिपाठी ने कहा कि पिछले 7-8 महीनों से पश्चिमी अरब सागर में भारतीय नौसेना एकदम हावी हो गई है।

ऑपरेशन सिंदूर के दौरान बेहद कम समय में 30 से अधिक जहाजों और पनडुब्बियों की अभूतपूर्व तैनाती की गई। भारत की तैयारियों को देखकर पाकिस्तानी सेना पाकिस्तानी नौसेना डरी हुई है। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भी पाकिस्तानी नौसेना अपने बंदरगाहों में ही दुबकी हुई थी। एडमिरल त्रिपाठी ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर आतंक के खिलाफ ऐसा अभियान है जो कि अभी खत्म नहीं हुआ है। बता दें कि पहलगाम में आतंकी हमले के बाद भारतीय सेना ने पाकिस्तान में कम से कम 9 आतंकी ठिकानों को निशाना बनाया था। इसके बाद बौखलाए पाकिस्तान ने मिसाइल दागी।

मध्य प्रदेश शासन के निर्देशानुसार अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव के अंतर्गत गीता जयंती महोत्सव का आयोजन भव्य रूप से धार के पीजी कॉलेज सभागार में किया गया

दिलीप पाटीदार

धार। मध्य प्रदेश शासन के निर्देशानुसार अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव के अंतर्गत गीता जयंती महोत्सव का आयोजन भव्य रूप में धार के पीजी कालेज सभागार में किया गया। कार्यक्रम के अतिथि देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के पूर्व विभागाध्यक्ष डा. पीएन मिश्रा, जिला पंचायत अध्यक्ष श्री सरदार सिंह मेड़ा, अपर कलेक्टर श्री संजीव केशव पांडे, समाजसेवी श्री विश्वास पांडे तथा जिला पत्रकार संघ के अध्यक्ष पं. छोटू शास्त्री थे। मप्र शासन के संस्कृति विभाग द्वारा यह कार्यक्रम आयोजित किया गया था। आयोजन का शुभारंभ अतिथियों द्वारा भगवान श्रीकृष्ण के चित्र एवं श्रीमद्भगवद्गीता का पूजन कर किया गया। इस अवसर पर अपने उद्बोधन में डा. पीएन मिश्रा ने गीता में निहित प्रबंधन के सूत्रों के बारे में व्याख्या करते हुए लोगों को समझाया। उन्होंने कहा कि श्रीमद्भगवद्गीता

के अध्ययन से जीवन के हर क्षेत्र में प्रबंधन की जानकारी मिलती है। निष्काम कर्म करने की प्रेरणा प्रदान करता है। श्रीमद्भगवद्गीता का अध्ययन आज के हर वर्ग और हर आयु वर्ग के लिए प्रेरणादायी एवं मार्गदर्शक है। जिला पत्रकार संघ के अध्यक्ष पं छोटू शास्त्री द्वारा गीता की वर्तमान प्रासंगिकता के संदर्भों पर विचार व्यक्त किए गए। इसके पूर्व अतिथियों का स्वागत विश्व गीता प्रतिष्ठान के संयोजक पं. संतोष पांडे और विश्व गीता प्रतिष्ठान के कार्यक्रम प्रभारी व परशुराम कल्याण बोर्ड के पं. अशोक मनोहर जोशी ने किया।

नृत्य-नाटिका रही आकृषण् का केंद्र

इस अवसर पर भगवान श्रीकृष्ण के जीवन पर आधारित चित्रकला प्रदर्शनी भी लगाई गई, जिसका विद्यार्थियों और सभागार में उपस्थित सभी लोगों ने अवलोकन किया और सराहा। आयोजन का मुख्य आकर्षण नूपुर कला केंद्र की नृत्य-नाटिका रही, जिसमें श्रीकृष्ण की दो रानियों-सत्यभामा और रुक्मणी-से जुड़े प्रसंगों को प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का संचालन जिला पुरातत्व, पर्यटन एवं संस्कृति परिषद के नोडल अधिकारी श्री प्रवीण शर्मा द्वारा किया गया। कार्यक्रम में ब्राह्मणों द्वारा गीता के 15वें अध्याय का स-स्वर पाठ किया गया, जिसे सभागार में उपस्थित गणमान्य लोगों ने भावपूर्वक दोहराया।

ज्ञान जनित वाद-विवाद से परे स्वयं को जानने की कला है सहजयोग

बूझ सरीखी बात हैं, कहन सरीखी नाहि,
जेते ज्ञानी देखिये, तेते संसै माहि।

उपरोक्त वर्णित दोहे में संत कबीर कहते हैं कि, आत्मसाक्षात्कार, स्व-स्वरूप की बात तो समझने तथा अनुभव करने की है, यह वादविवाद का विषय नहीं है। वाद विवाद करने वाले जितने वाचिक ज्ञानी हैं वे सब संशय में पड़ जाते हैं।

प. पू. श्री माताजी, प्रणित सहजयोग ध्यान एक साक्षात अनुभव है, जिसे अपने सूक्ष्म तंत्र पर जाना जा सकता है। साधारणतः जब हम ध्यान करने बैठते हैं और अपनी आंखें बंद करते हैं तो बहुत सारे विचार अपने मानसपटल पर आने लगते हैं । हम पांच मिनट के लिये भी अपनी आंखें बंद करके शांत नही बैठ सकते, अपने-आप का सामना नही कर सकते। एक क्षण के लिये भी हम हमारे विचारों से छुटकारा नहीं पा सकते। बैचने हो जाते हैं और अपने मन को कहीं न कहीं उलझाते रहते हैं, विचारों का निषेध करने की कोशिश करते हैं। पंरतु यह स्थिति ध्यान नहीं है और ऐसे में हम निर्विचार अवस्था का अनुभव कभी भी कर ही नहीं सकते। अपने - आपसे एक प्रश्न पूछें क्या मैं एक क्षण के लिये भी शांत या निर्विचार रह सकता हूं ? अगर आपका उत्तर नकारात्मक है तो सहजयोग ध्यान आपके लिए सहायक हो सकता है। सहजयोग ध्यान सीखने के लिये आपको अपनी इच्छाशक्ति और जिज्ञासा जागृत कर अपना आत्मसाक्षात्कार मांगना होगा। सहजयोग में साधक को सूक्ष्म तंत्र के बारे में बताया जाता है तत्पश्चात सूक्ष्मशरीर में मे स्थित इड़ा-पिंगला नाड़ी का संतुलन कर मध्य नाड़ी सुषुम्णा द्वारा सहस्रार चक्र पर ध्यान केन्द्रित करने की कला सिखायी जाती है। श्रीमाताजी कहते हैं हमारा सहजयोग, "आधि कळस मग पाया इस न्याय से चलता है ध्यान करने आये साधक को सर्वप्रथम निंर्विचार अवस्था प्राप्त होती है और इसके बाद आत्मपरीक्षण से साधक चित्त शुद्धी कर अपने आपको स्वच्छ और दुर्गुणों से दूर रखता है। श्रीमाताजी कहते हैं, सहजयोग एक अनुभूतिजन्य योग है । इस योग में आपको उस ज्ञान की साक्षात् अनुभूति होती है । जिसे वर्णित करने के लिये सभी धर्मग्रंथों ने उपमाओं व दृष्टांतों की झड़ी लगा दी है वह आत्मज्ञान, निर्विचारिता, व निरानंद सहजयोग में आत्मसाक्षात्कार प्राप्ति के साथ सहज में ही प्राप्त हो जाता है। अपने नज़दीकी सहजयोग ध्यान केंद्र की जानकारी टोल फ्री नंबर 1800 2700 800 अथवा यूट्यूब चैनल लर्निंग सहजयोगा से प्राप्त कर सकते हैं। सहजयोग पूर्णतया निःशुल्क है।

मध्य प्रदेश में पत्रकारों पर हमला करने वाले दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग

नेशनल यूनियन ऑफ जर्नलिस्ट्स (इंडिया) ने 28 नवंबर, 2025 को पत्रकारों के साथ हुई बदसलूकी और बेरहमी से मारपीट में शामिल दोषियों के खिलाफ सख्त और तुरंत कार्रवाई की मांग की है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, मध्य प्रदेश के इंदौर में शुक्रवार (28 नवंबर, 2025) को RTO ऑफिस में कथित भ्रष्टाचार की रिपोर्टिंग करते समय दो पत्रकारों की पिटाई की गई। पुलिस ने कहा कि इस मामले में सात लोगों पर केस दर्ज किया गया है। एक नेशनल न्यूज़ चैनल के रिपोर्टर हेमंत शर्मा और चैनल के कैमरापर्सन राजा खान पर इंदौर के नायता मुंडला में RTO परिसर में कुछ लोगों ने हमला किया।

नेशनल यूनियन ऑफ जर्नलिस्ट्स (इंडिया) इस बेरहमी से हुए हमले की कड़ी निंदा करता है और अधिकारियों से तुरंत और निष्पक्ष जांच शुरू करने का आग्रह करता है ताकि यह पक्का हो सके कि दोषियों को बिना देर किए सज़ा मिले। नेशनल यूनियन ऑफ़ जर्नलिस्ट्स (इंडिया) के प्रेसिडेंट रास बिहारी ने मध्य प्रदेश में पत्रकारों पर हुए हमले की कड़ी निंदा की। उन्होंने कहा कि डेमोक्रेसी में मीडिया को असली तस्वीर दिखाने की आज़ादी और ज़िम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि मीडिया वालों पर हमलों के मामले प्रेस काउंसिल ऑफ़ इंडिया के सामने भी उठाए जाएंगे।

सेक्रेटरी जनरल प्रदीप तिवारी ने कहा कि मीडिया वालों पर किसी भी तरह का हमला बर्दाश्त नहीं किया जा सकता, और NUJ(I) इस घटना की कड़ी निंदा करता है। राज्य में ऐसे हमलों की बढ़ती संख्या पर गहरी चिंता जताते हुए, NUJ(I) प्रेसिडेंट ने कहा कि पत्रकारों पर हर दिन हमले हो रहे हैं, जो किसी भी हालत में मंज़ूर नहीं है।

नेशनल यूनियन ऑफ़ जर्नलिस्ट्स (इंडिया)

रणजीत टाइम्स

क्या खकनार पुलिस की पकड़ से ज्यादा मजबूत अवैध जुआ क्लब संचालकों की पकड़ है,?

जुआ क्लब संचालकों को किसकी है छत्रछाया थाना प्रभारी की कार्यशैली पर उठते सवाल खकनार पुलिस की पकड़ हुई कमज़ोर

महेन्द्र मालवीय

बुरहानपुर जिले के खकनार थाना अंतर्गत जुआ अब चोरी छिपे नहीं बल्कि खकनार थाने से लगभग 2 किलोमीटर की दूरी पर धड़ल्ले से चल रहा है जुआ । खकनार में जुआ क्लब सुबह से ही सज जाते हैं। ताश के पत्तों पर हजारों रुपए के दांव लगाकर लोग भाग्य आजमा रहे हैं। भाग्य के इस मोह जाल भरे इस खेल में सैकड़ों परिवार तबाही का शिकार हो चुके है। जिसमें युवा जुआ के लत से पीड़ित होकर घर की पूंजी गंवा रहा है और बर्बादी के रास्ते पर चल रहा है। सूत्रों की माने तो खकनार क्षेत्र में जुआ को लेकर यह स्थित है कि खकनार से कुछ ही दूरी पर एक सुनसान बिल्डिंग में जुआ क्लब जमकर चल रहा है। खकनार थाना क्षेत्र में इस तरह जुआ क्लब चलना कई सवाल पैदा कर रहा है। सूत्रों से मिली जानकारी अनुसार खकनार थाने ने कुछ समय पूर्व खकनार के जुआ खेल रहे कुछ लोगों पर नाम मात्र की कारवाई की थी। लेकिन जिनके नाम प्रचलित है कि खकनार में ये फलाना व्यक्ति क्लब चला रहे है उन पर न कारवाई हो रही है न ही जुआ क्लब बंद हो रहा है। आस पास के गांवों सहित पूरे खकनार में चर्चा है कि जुआ क्लब कैसे चल रहा है। पुलिस जुआ क्लब क्यों बंद नहीं करवा रही है।

यू तो खकनार पुलिस आए दिन मुखबिर की सूचना पर अवैध गतिविधियों पर हथियार तस्करों पर शिकंजा कस रही हैं जंगलों में पहुंच जाते हैं लेकिन खकनार तहसील में थाना क्षेत्र से लगभग दो किलोमीटर की दूरी पर अवैध जुआ कारोबार धड़ल्ले से फल फूल रहा है लेकिन जिम्मेदारों का इस ओर कोई ध्यान नहीं होना बहुत गंभीर विषय है। क्या मुखबिर अवैध जुआ क्लबों की सूचना पुलिस को नहीं देते या सूचना मिलने पर भी कोई कार्यवाही नहीं कर पा रहे हैं इससे साफ अंदाजा लगाया जा सकता है कि खकनार में जुआ कारोबारियों का नेटवर्क कितना मजबूत है। क्यों खकनार पुलिस अवैध जुआ क्लब बंद नहीं करवा पा रही है। अब सोचने वाली बात यह है कि क्या अवैध जुआ पत्ता कारोबार पुलिस की मर्जी से चल रहा है ? आखिर इन दबंग अवैध कारोबारियों को किसकी है सय है आखिर क्यों पुलिस इन पर कार्यवाही नहीं कर पा रही है। और यदि कारवाई करती भी है तो कुछ लोगों पर नाम मात्र की कारवाई करके खानापूर्ति की जा रही है। लेकिन थाना प्रभारी महोदय जुआ क्लब बन्द नहीं करवा पा रहे हैं इससे कही ना कही खकनार पुलिस की साठ गांठ होने का शक है । जुआ कारोबारि इतने बिंदास है कि एक पल में यहां कार्यवाही होती हैं और दूसरे ही पल क्लब चालू हो जाता है या ये कहे कि जुआ क्लब बन्द करने की जरूरत भी नहीं पड़ती सिर्फ जगह बदलो की कार्यवाही हो रही है कही कानून के हाथों से लम्बे हाथ जुआ क्लब संचालकों के तो नहीं हो गए जिससे खकनार पुलिस वहां पर नहीं पहुंच पा रही है खकनार पुलिस कार्यवाही करने में नाकाम है अब देखना यह है कि अब क्लब संचालकों की दबंगई चलती हैं या पुलिस का दण्डा ??? क्या खकनार थाना प्रभारी करवा पाएंगे अवैध जुआ क्लब बन्द आखिर कौन बचा रहा है इन अवैध जुआ क्लब संचालकों को पुलिस या राजनेताआखिर किसके दबाव में खकनार पुलिस नहीं कर पा रही है इन अवैध कारोबारियो के खिलाफ कोई कार्यवाही?? सवाल कई है जिनके जवाब मिलना शायद बहुत मुश्किल है।

8 माह से SDM कार्यालय के चक्कर लगा रही बुजुर्ग महिला की फरियाद सुनी गई, मंगलवार की जनसुनवाई में हुआ समाधान

शिवपुरी। करैरा की श्रीमती काशी देवी और सुनील कुमार जोशी पिछले आठ माह से बैंक लोन के लिए जरूरी डायवर्सन की नकल प्राप्त करने हेतु SDM कार्यालय का लगातार चक्कर लगा रहे थे। पूर्व अधिकारियों से गुहार लगाने के बाद भी कोई कार्रवाई न होने से दोनों बेहद परेशान थे। मंगलवार को वे अपनी शिकायत लेकर एसडीएम करैरा की जनसुनवाई में पहुंचे। जनसुनवाई में एसडीएम ने मामले को तत्काल संज्ञान में लिया और मौके पर ही प्रकरण का निराकरण कर आदेश की प्रतिलिपि आवेदिका को प्रदान कर दी। लंबे समय से अटकी फाइल समाधान होते ही महिला ने राहत की सांस ली। प्रशासन ने आश्वासन दिया कि आमजन की ऐसी समस्याओं का समय पर निपटारा प्राथमिकता से किया जाएगा।

ऑपरेशन में महिला की मौत के 21 दिन बाद भी कार्रवाई नहीं, पीड़ित परिवार बैठा भूख हड़ताल पर...

मौत के अस्पताल में मौत का खेल चालू होने के बाद भी नहीं लिया प्रशासन ने एक्शन

महेन्द्र मालवीय बुरहानपुर में हड़कंप ! ऑपरेशन में महिला की मौत—21 दिन बाद भी कार्रवाई नहीं, परिजन भूख हड़ताल पर... प्रशासन को सद्बुद्धि दिलाने किया हनुमान चालीसा पाठ ।

बुरहानपुर लालबाग रोड स्थित हकीमी अस्पताल में गर्भाशय के ऑपरेशन के दौरान हुई महिला की मौत ने जिले में उबाल ला दिया है। मृतका वैष्णवी चौहान के परिजन पिछले 21 दिनों से न्याय की गुहार लगा रहे हैं, लेकिन कार्रवाई न होते देख अब शनवारा गेट पर क्रमिक भूख हड़ताल पर बैठ गए हैं। परिजनों का गंभीर आरोप है कि ऑपरेशन थिएटर में ऐसे डॉक्टर मौजूद थे जिनका सर्जरी से कोई संबंध नहीं था, और अस्पताल प्रबंधन की गंभीर लापरवाही—यहां तक कि हत्या जैसे कृत्य के कारण महिला की जान चली गई। आज हड़ताल स्थल पर परिजन और स्थानीय लोगों ने प्रशासन को सद्बुद्धि देने के लिए हनुमान चालीसा का पाठ किया। इसी दौरान AMIM पार्टी के संयोजक और जिलाध्यक्ष सहित कई सदस्य पहुंचे और पीड़ित परिवार को समर्थन दिया। परिवार का कहना है— "जब तक अस्पताल सील नहीं होता और जिम्मेदारों पर कड़ी कार्रवाई नहीं होती, हड़ताल जारी रहेगी।" AMIM संयोजक नफीस मंशा खान ने कहा कि ऐसे मामलों में सख्त कार्रवाई जरूरी है, ताकि दोबारा लापरवाही से किसी की जान न जाए। वहीं जिलाध्यक्ष जहीर उद्दीन ने निष्पक्ष जांच और तत्काल कार्रवाई की मांग की है।

अवसाद की छाया में घिरता जा रहा बचपन

अवसाद, चिंता, अकेलापन और दोस्तों या घर-परिवार से किसी तरह का समर्थन नहीं मिलने के कारण बच्चों में आत्महत्या के विचार पनपने लगते हैं। बच्चों के काम करने के तरीके, उनके व्यवहार में आ रहा बदलाव, उनकी खामोशी या फिर गुस्सा और चिड़चिड़ापन जैसी व्यवहारगत आदतें सबसे पहले माता-पिता को पता चलती हैं, इसलिए उन्हें सतर्क रहने की जरूरत है। इसके अलावा स्कूल में शिक्षकों और दोस्तों को भी सावधानी बरतने की आवश्यकता है। आत्महत्या के विचार या योजना बनाने वाले बच्चे या किशोर को तुरंत किसी अच्छे मनोचिकित्सक के पास ले जाकर उपचार किया जा सकता है। बच्चों और किशोरों की आत्महत्या की घटनाएं बढ़ना न केवल हमारी शिक्षा व्यवस्था पर सवाल है, बल्कि हमारे घर-परिवार और समाज की उदासीनता एवं लापरवाही को भी उजागर करता है। आखिर क्यों हम अपने बच्चों को समझ नहीं पा रहे हैं? क्यों हम उनके मन को पढ़ नहीं पा रहे हैं?

अमित बैजनाथ गर्ग

देश में बच्चों और किशोरों से संबंधित आत्महत्या की बढ़ती घटनाएं कई सवालों पर सोचने के लिए मजबूर करती हैं। सबसे पहला सवाल तो यह है कि आखिर बच्चे इस तरह का जानलेवा कदम उठाने को क्यों मजबूर हो रहे हैं? दूसरा, हम अपने बच्चों को कैसी शिक्षा व्यवस्था और परिवेश में ढाल रहे हैं। तीसरा और सबसे अहम सवाल है कि आखिर बच्चे मानसिक रूप से इतने कमजोर क्यों हो रहे हैं? ये सभी पहलू आपस में एक-दूसरे से गहरे तक जुड़े हुए हैं।

असल में आज के दौर में बच्चे मानसिक स्वास्थ्य विकार और अवसाद से ग्रस्त हो रहे हैं। बच्चों में आत्महत्या के प्रयास अक्सर आवेगपूर्ण होते हैं। ये प्रयास उदासी, भ्रम, क्रोध और अति सक्रियता संबंधी समस्याओं से जुड़े हो सकते हैं। उन पर पढ़ाई और परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन का दबाव भी बना रहता है। यह दबाव इतना गहरा हो जाता है कि वे अवसाद का शिकार हो जाते हैं और पढ़ाई का बोझ सहन नहीं कर पाते। यह कहना गलत नहीं होगा कि हमारी शिक्षा व्यवस्था और आसपास का माहौल नौनिहालों के जीवन पर भारी पड़ रहा है।

पिछले दिनों जयपुर के एक स्कूल की छठी कक्षा की छात्रा ने विद्यालय भवन की चौथी मंजिल से कूदकर आत्महत्या कर ली। इसके बाद मध्य प्रदेश के रीवा में एक स्कूली छात्रा ने खुदकुशी कर ली थी। इसी तरह दिल्ली के एक स्कूल के छात्र ने मेट्रो प्लेटफार्म से कूदकर अपनी जान दे दी। इस तरह की घटनाएं समाज को झकझोर देने वाली हैं। सवाल है कि इन विद्यार्थियों के मन में पनपती पीड़ा को आखिर कोई क्यों नहीं समझ पाया, जो उनकी मौत का कारण बन गया। दरअसल, बच्चों से लेकर युवाओं तक में आत्महत्या की बढ़ती प्रवृत्ति एक गंभीर समस्या बनती जा रही है।

एक अनुमान के अनुसार, 15 से 24 वर्ष की आयु के किशोरों और वयस्कों में आत्महत्या मृत्यु का एक बड़ा कारण है। खुदकुशी के प्रयास तनाव, आत्म-संदेह, सफलता का दबाव, वित्तीय अनिश्चितता, निराशा और नुकसान की भावनाओं से जुड़े हो सकते हैं। इसके अलावा, स्कूल में शिक्षकों या सहपाठियों का अनुचित व्यवहार, पारिवारिक कलह, हिंसा के संपर्क में आना, आवेगशीलता, आक्रामकता, अस्वीकृति और लाचारी की भावनाएं भी आत्महत्या के विचार को गहरा कर सकती हैं।

मनोवैज्ञानिकों के मुताबिक, अगर थोड़ी सी सतर्कता बरती जाए तो बच्चों और किशोरों की कुछ खास अभिव्यक्तियों से इस बात का अंदाजा लगाया जा सकता है कि उनके भीतर आत्महत्या के विचार पनप रहे हैं। जैसे- वे अक्सर खुद को नुकसान पहुंचाने वाली टिप्पणियां कर सकते हैं या किसी छोटी-सी बात पर अचानक आक्रामक व्यवहार करने लगते हैं। इसके अलावा चेतावनी के अन्य संकेतों में खाने या सोने की आदतों में बदलाव, उदास मन, दोस्तों-परिवार और नियमित गतिविधियों से दूरी तथा शैक्षणिक कार्यों की गुणवत्ता में गिरावट देखी जा सकती है।

आत्महत्या के बारे में सोचने वाले भविष्य की योजना बनाने या उसके संबंध में बात करना भी बंद कर सकते हैं। असल में अवसाद और आत्महत्या की भावनाएं मानसिक विकार हैं, जिनका इलाज संभव है। बच्चे या

किशोर की बीमारी की पहचान कर उचित उपचार किया जा सकता है। अक्सर देखा गया है कि आत्महत्या के बारे में बात करने में लोग असहज महसूस करते हैं। हालांकि अपने बच्चों से यह पूछना मददगार हो सकता है कि क्या वह अवसादग्रस्त है या आत्महत्या के बारे में सोच रहा है। इस तरह के प्रश्न बच्चे को यह आश्वासन दे सकते हैं कि कोई उसकी परवाह करता है और ऐसे में बच्चे अपनी समस्याओं के बारे में खुल कर बात कर सकते हैं।

बच्चों के साथ संवाद की कमी भी एक बड़ी समस्या है। असल में आज की भाग-दौड़ भरी जिंदगी में माता-पिता अपने बच्चों को पर्याप्त समय नहीं दे पाते हैं। कामकाजी परिवारों में यह समस्या सबसे ज्यादा है, जहां एकल परिवारों में पति और पत्नी दोनों काम कर रहे हैं। ऐसे परिवारों के बच्चों में अवसाद सबसे ज्यादा घर कर रहा है। इन बच्चों को लगता है कि माता-पिता के पास उनके लिए समय नहीं है। ये बच्चे अपने मन की बात किससे कहें? मनोचिकित्सकों का मानना है कि आजकल छोटे बच्चे भी अवसाद और चिंता का शिकार हो रहे हैं। इसकी दो बड़ी वजह हैं। पहली, बच्चों को लगता है कि दुनिया में उनका कोई नहीं है, उनकी किसी को परवाह नहीं है। दूसरी, उन पर पढ़ाई का बोझ सबसे ज्यादा है। बेहतर प्रदर्शन की दौड़ में पिछड़ने का डर उनके मन में इस कदर बैठा दिया गया है कि वे किताबों से आगे कुछ सोच ही नहीं पाते।

राष्ट्रीय अपराध रेकार्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) की एक रपट के मुताबिक, वर्ष 2022 में देश में 13,044 बच्चों ने आत्महत्या की। इन मामलों में 2,248 विद्यार्थियों ने परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने पर यह कदम उठाया। वहीं एनसीआरबी के वर्ष 2001 के आंकड़े के मुताबिक, देश भर में 5,425 बच्चों ने आत्महत्या की थी। ये आंकड़े बताते हैं कि विद्यार्थियों की आत्महत्या की घटनाओं में कितनी तेजी से इजाफा हो रहा है। राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य सर्वेक्षण के अनुसार, देश में अवसाद से जूझ रहे 40 से 90 फीसद किशोर कई तरह की परेशानियों का सामना कर रहे हैं। वे मानसिक चुनौतियां की वजह से मादक पदार्थों का सेवन तक करने लगते हैं। आइसीएमआर का सर्वेक्षण बताता है कि देश में बारह से तेरह फीसद विद्यार्थी मनोवैज्ञानिक, भावनात्मक और व्यवहार संबंधी समस्याओं से जूझ रहे हैं। 'द लांसेट' पत्रिका का एक अध्ययन बताता है कि दुनिया का हर बारह में से एक बच्चा कभी न कभी आत्महत्या के विचार अपने मन में लाता है।

अवसाद, चिंता, अकेलापन और दोस्तों या घर-परिवार से किसी तरह का समर्थन नहीं मिलने के कारण बच्चों में आत्महत्या के विचार पनपने लगते हैं। बच्चों के काम करने के तरीके, उनके व्यवहार में आ रहा बदलाव, उनकी खामोशी या फिर गुस्सा और चिड़चिड़ापन जैसी व्यवहारगत आदतें सबसे पहले माता-पिता को पता चलती हैं, इसलिए उन्हें सतर्क रहने की जरूरत है। इसके अलावा स्कूल में शिक्षकों और दोस्तों को भी सावधानी बरतने की आवश्यकता है। आत्महत्या के विचार या योजना बनाने वाले बच्चे या किशोर को तुरंत किसी अच्छे मनोचिकित्सक के पास ले जाकर उपचार किया जा सकता है।

बच्चों और किशोरों की आत्महत्या की घटनाएं बढ़ना न केवल हमारी शिक्षा व्यवस्था पर सवाल है, बल्कि हमारे घर-परिवार और समाज की उदासीनता एवं लापरवाही को भी उजागर करता है। आखिर क्यों हम अपने बच्चों को समझ नहीं पा रहे हैं? क्यों हम उनके मन को पढ़ नहीं पा रहे हैं? चूक कहां हो रही है? इस पर गंभीरता से विचार करना होगा कि कहीं हमने पैसे कमाने की होड़ में अपने बच्चों को अकेले घुटने के लिए तो नहीं छोड़ दिया है? पढ़ाई में अव्वल आने की दौड़ में उन्हें जीवन जीने या यों कहिए कि बचपन से दूर तो नहीं कर दिया है? हमें सोचना होगा कि आखिर जिंदगी बड़ी है या किताबी सफलता। सवाल बहुत हैं, जिनके जवाब हम सबको मिलकर तलाशने होंगे, ताकि बच्चों और किशोरों के जीवन को सुरक्षित और खुशहाल बनाया जा सके।

तेजाजी मंदिर परिसर में कार्रवाईः 18 वर्षीय युवक से 9.87 ग्राम ब्राउन शुगर बरामद, बाणगंगा पुलिस की पकड़ मजबूत

इंदौर। बाणगंगा थाना क्षेत्र में सोमवार शाम पुलिस की सतर्कता एक बार फिर रंग लाई, जब तेजाजी मंदिर परिसर के पास संदिग्ध रूप से घूम रहे एक युवक को रोककर तलाशी लेने पर उसके पास से अवैध मादक पदार्थ ब्राउन शुगर बरामद की गई। इलाके में नियमित गश्त कर रही पुलिस टीम ने जैसे ही युवक को देखकर रुकने का इशारा किया, वह जल्दबाजी में वहाँ से निकलने लगा। इसी हरकत ने संदेह को और गहरा दिया। पुलिस दल ने प्रत्यक्षदर्शी पंचों की मौजूदगी में युवक से पूछताछ की, जिसने स्वयं को 18 वर्षीय निवासी बताया। तलाशी के दौरान उसके दाहिने हाथ में छिपाई गई पारदर्शी प्लास्टिक की थैली में भूरे मटमैले रंग का पाउडर मिला, जिसे देखकर पुलिस दल और पंचों ने अपने अनुभव के आधार पर मादक पदार्थ ब्राउन शुगर पहचाना। पूछने पर युवक ने भी स्वीकार किया कि थैली में ब्राउन शुगर ही है और उसके पास इसके संबंध में कोई अनुमति या दस्तावेज नहीं है। पुलिस के अनुसार आरोपी का कृत्य एनडीपीएस एक्ट की धारा 8/21 के तहत दंडनीय पाया गया है। प्रकरण दर्ज कर आगे की विवेचना प्रारंभ कर दी गई है।

चंदन नगर में वेपर लैम्प की रोशनी में चल रहा था जुआ, दो युवक पकड़े गए

इंदौर। चंदन नगर थाना क्षेत्र में रविवार रात पुलिस की त्वरित कार्रवाई में वेपर लैंप की हल्की रोशनी में ताश के पत्तों पर किस्मत आज़माते दो युवकों को रंगे हाथ पकड़ लिया गया। थाना चंदन नगर से ड्यूटी पर निकले एक अधिकारी को रास्ते में विश्वसनीय मुखबिर से सूचना मिली कि स्कीम 71 के सर्विस रोड पर, जहाँ लोडिंग वाहन खड़े रहते हैं, वहां एक गुमटी की आड़ में दो लोग ताश के पत्तों से रुपए की हार-जीत का दांव लगा रहे हैं। सूचना को गंभीरता से लेते हुए बीट में तैनात पुलिस बल को बुलाया गया और दो राहगीरों को पंच के रूप में तलब कर कार्रवाई के लिए साथ लिया गया, टीम मौके पर पहुँची और दूर से ही देखा कि दो युवक वेपर लैम्प की रोशनी में ताश के पत्तों के दांव लगाते बैठे हैं। पुलिस को देखकर दोनों घबरा गए और पकड़ में आ गए। पूछताछ में एक ने अपना नाम मोहम्मद अजहर उम्र 24 वर्ष निवासी चंदन नगर बताया, जबकि दूसरे ने अपना नाम सलमान उर्फ भूरा उम्र 27 वर्ष निवासी चंदन नगर बताया। मौके से आरोपियों के कब्जे से 1000 रुपये नगद, फड़ से 1100 रुपये, 18 ताश के पत्ते तथा उनके पास मिले 34 पत्ते बरामद कर पंचों की मौजूदगी में जब्त किए गए।

पार्टियों में हो रहा है धरती-आसमान हिला देने वाला शोर

घनश्याम कुमार देवांश

कला का रिश्ता संगीत से है और विध्वंस का शोर से। और जब त्योहारों और पारिवारिक उत्सवों में संगीत के स्थान पर शोर कब्जा कर ले, तब इसमें क्या शक रह जाता है कि कला के ऊपर विध्वंस हावी हो चुका है। हमारे आसपास और दूरदराज की दुनिया इसका उदाहरण बन चुकी है।

पिछले चार दशकों के दौरान यह दुनिया तेजी से बदली है। मनुष्य ने अपने जीवन से कलात्मक संघर्ष के सारे अवसर समाप्त कर दिए हैं। दिवाली के दीये पूरी रात नहीं जलते रह सकते थे। उनका होना अंधेरे के प्रतीकात्मक रूप से जूझ कर दिखाना भर था। उस रोशनी में एक सुकून से भरा एक आनंद था, लेकिन स्वीकार्यता भी थी। यह स्वीकार्यता कहती थी कि हार मानना भी नहीं है और हार को पचा जाना भी सीखना है। मनुष्य के भीतर का यह बोध उसे एक तरफ तो अहंकार से बचाता था और दूसरी ओर उसी अंधेरे की बांह में सिमटकर चैन की नींद सो जाना भी सिखाता था। मनुष्य अंधेरे से जितना डरता और घबराता था, उतने भर की रोशनी भी जुगाड़ कर लेता था, लेकिन कालांतर में उसने अंधेरे को जीत लेने का प्रण ठान लिया।

दिवाली और आसपास के सब त्योहार बीत जाने पर भी बिजली की लड़ियां बालकनी में

लटकी दिप-दिप करती दिख जाती हैं। कई जगहों पर भयानक विराट उजाले में भी उन्हें न जाने किससे लड़ने को छोड़ा गया है। कभी एक कतरा अंधेरा किसी कोने से दबा-छिपा गुजरता भी होगा, तो व्यंग्य भरी मुस्कान के साथ कहता होगा कि 'रहो भाई, तुम्हीं रहो, हम तो चले पाताल'। मनुष्य शायद भूल गया कि जिसे जीतना था, वह तो अपने भीतर का भय, आतंक और अहंकार रूपी अंधेरा था, लेकिन वह तो उल्टे कई-कई गुना बढ़ गया।

हुआ यह कि बाहर का भौतिक अंधेरा धरती और आसमान दोनों से मिट गया। जिस चांद और तारों से भरे आसमान को देखकर मनुष्य के भीतर कलात्मकता का सागर उमड़ता था, अब वह आसमान धूल में नहाया हुआ और कई बार खीझा हुआ दिखाई पड़ता है।

पवित्र हिमालय की श्वेत चादर हमारे कीचड़ सने पैरों से मैली हो चुकी है। आसमान भी कुछ ऐसी ही कीचड़ से भरी टूटी-फूटी गली जैसा दिखाई देता है। यों भी, उधर अब देखता ही कौन है? क्या हम रोशनी का अनुपात भूल गए? आखिर कितनी रोशनी चाहिए हमें जिंदा रहने के लिए? क्या उसकी कोई सीमा नहीं? इतनी रोशनी बढ़ गई है कि अब वह वक्त दूर नहीं जब लोग, खासकर शहरों में रहने वाले लोग, अंधकार के अधिकार के लिए कोर्ट-कचहरी करते नजर आएंगे। यह एक कल्पनात्मक स्थिति है, लेकिन प्रकृति के उतार-चढ़ावों को समझने लिए किसी सिरे की तो जरूरत होगी!

इस अपार रोशनी के शोर ने हमारी चेतना को बहरा कर दिया है। क्या हमने कभी उन पार्टियों में शिरकत की है, जहां नीम अंधेरे में संगीत का भयानक शोर मानव शरीर को कंपायमान कर देता है? गजब बात यह कि इसे भी संगीत कहा जाता है, लेकिन हर वह चीज जिसमें गति और लय होती है, क्या वह मनुष्य के जीवन के लिए कल्याणकारी है?

अगर ऐसा है तो क्या हम शिव के तांडव की कामना करना चाहेंगे? नहीं, क्योंकि वह संगीत विध्वंस और संहार का है। वह मनुष्य के लिए नहीं। हर व्यक्ति यह समझने के लिए मनोवैज्ञानिक नहीं हो सकता, लेकिन बारूद से उपजते शोर और प्रकाश को मनुष्य ने कब और कैसे अपने उत्सव और आनंद से जोड़ लिया, यह मनोवैज्ञानिक शोध का विषय है। हमारे पूर्वजों ने उत्सवों को नृत्य और संगीत से जोड़ा, कलात्मक सृजन से जोड़कर भूमि और भित्तियों को सजाने से जोड़ा, अन्न और अग्नि के संबंध को बनाकर सुस्वादु रसों की निष्पत्ति से जोड़ा, मन और शरीर दोनों के शुद्धिकरण और सौंदर्यीकरण से जोड़ा, एक दूसरे के प्रति क्षमाभाव से जोड़कर सामाजिकता को मजबूत करने से जोड़ा! और आज हम उत्सव की सात्विकता को शोर और चकाचौंध के किस दलदल में धकेल आए हैं, जहां या तो मानवीय सौंदर्यबोध का विनाश है या फिर सामाजिक दायित्वबोध का। क्या अब हमने उत्सव के दिनों में स्वार्थ और बेवकूफी की पट्टी नहीं बांध ली है और ऊपर से वह शोर भी हावी कर लिया है, जहां किसी जीव की आंखों में जलता हुआ धुआं भी देखने के लिए हम अयोग्य साबित हो चुके हैं।

उत्सवों को हमने शोषण और दोहन का अवसर बना दिया है। ये सामाजिक हाशियाकरण के औजार बन गए हैं। प्रदर्शन और अहंकार इसके नए स्थापित आयाम हैं। अपार शोर और बाजार के विराट स्वरूप के नीचे, बल्कि बहुत नीचे संवेदना, कलात्मकता और आनंद की धारा लुप्त हो गई है। इस त्रिवेणी पर उत्सव का आयोजन तो बड़ा भारी है, लेकिन जल की एक बूंद भी नहीं है। आज कबीर होते, तो इस बात पर रो देते। वे अपनी जलती हुई लुकाठी लेकर इन मुर्दों की भीड़ को खदेड़ देते और अपने हाथों से त्रिवेणी की मिट्टी को तब तक कुरदते, जब तक उन्हें वहां सोई हुई सरिता नहीं मिल जाती।

वे इस उत्सव की त्रिवेणी को फिर से चांदी से चमकते जल से भर देते, जिसमें मनुष्य अपना मुख धोकर चैतन्य हो पाता। तो कबीर कहां हैं? क्या हम सबको अपने भीतर झांक कर नहीं देखना चाहिए!

चेसिस नंबर बदला और बेच दी; दिल्ली में लग्जरी गाड़ियां चुराने वाले पकड़े गए

नई दिल्ली, एजेंसी। पश्चिमी दिल्ली जिला पुलिस की एएटीएस टीम ने दिल्ली से लग्जरी गाड़ी चोरी कर उनके नम्बर बदलकर राजस्थान हरियाणा में बेचने वाले दो बदमाशों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों अनीस अहमद और सुनील की निशानदेही पर पुलिस ने दो गाड़ी बरामद की है। सुनील उर्फ बंटी गाड़ी चोरी करता था और अनीस अहमद को दे दिया करता था। जो उनके चेसिस और नम्बर बदलकर आगे बेच दिया करता था। अनीस अहमद ढिचाऊं कला गांव में अपना वर्कशॉप चलाता है। फिलहाल पुलिस ने दोनों को जेल भेज दिया है। पुलिस अधिकारी ने बताया कि एएटीएस टीम के एसआई गजेंद्र माथुर को सूचना मिली थी कि चोरी की गाड़ी बेचने के लिए गुरुग्राम सेक्टर 26 में डिलिंग होने वाली है। सूचना को पुख्ता करने के बाद इंस्पेक्टर मुकेश कुमार मीणा की टीम ने 29 नवम्बर को पुलिस ने सुनील उर्फ बंटी को दबोच लिया। पूछताछ के दौरान सुनील ने बताया कि उसने गत दिनों विकासपुरी और बेगमपुर से दो वाहन चोरी कर अनीस को दिए थे। अनीस चोरी के वाहनों को नया करने और पुनर्विक्रय करने का काम करता है। इन गाड़ियों को न्यू फ्रेंड्स ऑटोमोबाइल्स, दिचाऊं रोड, शिव एन्क्लेव स्थित अनीस की वर्कशॉप में तैयार किया जाता था और उसके बाद उन्हें राजस्थान और हरियाणा में बेच दिया जाता था।पुलिस ने वर्कशॉप पर छापा मार कर अनीस को गिरफ्तार कर लिया। आरोपियों की निशानदेही पर हुंडई क्रेटा और मारुति स्विफ्ट डिजायर बरामद की। सामने आया कि गाड़ी चोरी सुनील करता था, वह रेजिडेंशियल कॉलोनियों और पब्लिक पार्किंग में खड़ी गाड़ितयों को निशाना बनाता था।

नमो भारत स्टेशन, बहुमंजिला पार्किंग

नई दिल्ली, एजेंसी।
दिल्ली-जयपुर हाईवे स्थित राजीव चौक पर नमो भारत ट्रेन के भूमिगत स्टेशन, बस अड्डे के अलावा बहुमंजिला पार्किंग का निर्माण होगा। इसकी एकीकृत योजना तैयार करने के दिशा-निर्देश जिला उपायुक्त अजय कुमार ने राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परिवहन निगम (एनसीआरटीसी) को जारी किए हैं।एनसीआरटीसी की दिल्ली के सराय रोहिल्ला से लेकर गुरुग्राम होते हुए रेवाड़ी के बावल तक नमो भारत ट्रेन चलाने की योजना है। केंद्र सरकार ने इस योजना को मंजूरी प्रदान कर दी है। इस योजना के तहत राजीव चौक पर भूमिगत स्टेशन तैयार होना है। इसको लेकर एनसीआरटीसी ने परिवहन विभाग से पांच एकड़ जमीन देने का आग्रह किया था। इस बीच गुरुग्राम महानगर विकास प्राधिकरण (जीएमडीए) ने इस जमीन पर बस अड्डा तैयार करने की योजना बना डाली। इसको लेकर फैसला हुआ था कि नमो भारत ट्रेन का स्टेशन भूमिगत होगा, जबकि इसके ऊपर सिटी बस का अड्डा तैयार होगा।

कुछ दिन पहले जिला उपायुक्त अजय कुमार की अध्यक्षता में एक बैठक हुई। इसमें एनसीआरटीसी से मुख्य परियोजना प्रबंधक केके गुप्ता के अलावा परियोजना समन्वयक केसी शर्मा मौजूद रहे। जिला

उपायुक्त ने निर्देश जारी किए हैं कि मिनी सचिवालय के सामने 15.2 एकड़ जमीन है। एकीकृत योजना के तहत एनसीआरटीसी इस पूरी जमीन का डिजाइन तैयार करें।

इस जमीन में नमो भारत का स्टेशन, बस अड्डा, बहुमंजिला पार्किंग, पार्क, रेस्तरां, दुकानों का निर्माण, ऑटो रिक्शा की पार्किंग का बंदोबस्त किया जाए। यह सारी सुविधाएं एकसाथ होने के कारण लोगों को राहत मिलेगी। नमो भारत स्टेशन या बस अड्डा पर आने के दौरान उन्हें वाहनों को खड़ा करने की असुविधा नहीं होगी। मिनी सचिवालय में किसी कार्यवश अपने वाहन के साथ आने वाले लोगों को भी मल्टीलेवल पार्किंग बनने के बाद किसी तरह की असुविधाओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। मौजूदा समय में लोगों को वाहनों को खड़ा करने में दिक्कत होती है। बैठक में अतिरिक्त उपायुक्त वत्सल वशिष्ठ, एसडीएम परमजीत चहल, बीएसएनएल के मुख्य प्रबंधक सुरेश, हरियाणा रोडवेज की यातायात प्रबंधक रीतू शर्मा, पीडब्ल्यूडी बीएंडआर के कार्यकारी अभियंता चरणदीप राणा, कृषित विभाग से वास्तुकार अभिलाश आदि मौजूद थे।

नमो भारत रूट के लिए 3518 पेड़ कटेंगे-
नमो भारत ट्रेन के डीएलएफ साइबर सिटी से लेकर राजीव चौक तक संचालन में 3518 पेड़ों को काटा जाएगा। वन विभाग ने इन पेड़ों की कटाई को लेकर गुरुग्राम महानगर विकास प्राधिकरण (जीएमडीए) की पर्यावरण शाखा को मंजूरी प्रदान कर दी है। बता दें कि एनसीआरटीसी की तरफ से डीएलएफ साइबर सिटी से लेकर राजीव चौक तक एलिवेटिड ट्रैक बनाया जाएगा। राजीव चौक की यह जमीन परिवहन विभाग और कृषि विभाग की है। दो साल से जीएमडीए पांच एकड़ जमीन को बस अड्डा तैयार करने के लिए परिवहन विभाग से मांग रहा है, लेकिन यह जमीन नहीं सौंपी जा रही। तीन महीने पहले नगर एवं ग्राम नियोजन विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव अपूर्व कुमार सिंह की अध्यक्षता में बैठक हुई थी।

दिल्ली तिगड़ी अग्निकांड: 2 मृतकों की पहचान नहीं; कारण भी अबूझ

फोरेंसिक टीम ने नमूने लिए

नई दिल्ली, एजेंसी। दक्षिण दिल्ली के तिगड़ी एक्सटेंशन में चार मंजिला इमारत में एक दिन पहले लगी भीषण आग में मारे गए 4 लोगों में से 2 की अभी तक पहचान नहीं हो पाई है। एक अधिकारी ने बताया कि वे आग लगने के कारणों का पता लगाने के लिए अभी भी सुराग तलाश रहे हैं।

घनी आबादी वाले इलाके में स्थित इस इमारत के भूतल पर स्थित एक जूते की दुकान में शनिवार शाम करीब 6:24 बजे आग लग गई। इस घटना में 4 लोगों की मौत हो गई। इनमें से दो की पहचान 38 साल के बिल्डिंग मालिक सतेंद्र उर्फ ??जिमी और उनकी 40 साल की बहन अनीता के रूप में हुई है। मृतकों में अन्य दो पुरुष हैं। माना जा रहा है कि वे दुकान पर मौजूद ग्राहक थे। हालांकि उनकी पहचान अभी नहीं हो पाई है। 40 साल की एक अन्य महिला ममता 25 प्रतिशत तक जल गई हैं और उनका इलाज चल रहा है।

जांचकर्ताओं के अनुसार, परिवार के

सदस्यों का अनुमान है कि आग दुकान के अंदर रखे एक पुराने रेफ्रिजरेटर से लगी होगी। एक पुलिस अधिकारी ने कहा कि शुरुआती जांच से पता चला है कि परिसर में बड़ी मात्रा में रखे चमड़े और प्लास्टिक के जूतों ने आग में घी का काम किया। आग तेजी से पूरी बिल्डिंग में फैल गई।

रविवार को क्राइम और फोरेंसिक टीमों ने सीलबंद इमारत के अंदर कई घंटे बिताए। टीम ने जले हुए तारों, पिघले हुए उपकरणों और जूतों के अवशेषों के नमूने एकत्र किए। जिस गली में इमारत स्थित है, उसे सुरक्षा के लिए दोनों तरफ से बैरिकेडिंग कर दी गई है। अधिकारी ने कहा कि फोरेंसिक रिपोर्ट का इंतजार है। बिजली की खराबी सहित सभी पहलुओं की जांच की जा रही है। मूलरूप से उत्तर प्रदेश के एटा के रहने वाले मृतकों के परिवार लगभग तीन दशकों से तिगडी एक्सटेंशन में रह रहे थे। परिवार ने एक पड़ोसी के घर में शरण ली है क्योंकि इमारत को असुरक्षित घोषित कर दिया गया है।

अधिकारी ने कहा कि शेष दो मृतकों की पहचान करने के लिए पुलिस को आस-पड़ोस में गुमशुदगी की रिपोर्ट की जांच करने का निर्देश दिया गया है।

शशि थरूर ने बढ़ा दी कांग्रेस की टेंशन?

अहम बैठक में फिर नहीं पहुंचे

नई दिल्ली, एजेंसी। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता शशि थरूर बीते कुछ समय से कांग्रेस से किनारा कसते नजर आ रहे हैं। वहीं वह कई बार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मोदी सरकार के फैसलों की तारीफ कर चुके हैं। हाल ही में एसआईआर के विरोध में रणनीत बनाने के लिए बुलाई गई कांग्रेस की मीटिंग में भी शशि थरूर शामिल नहीं हुए। इसके लिए उन्होंने स्वास्थ्य कारणों का हवाला दिया था। वहीं अब संसद के शीतकालीन सत्र की रणनीति को लेकर हुई बैठक में भी वह गैरहाजिर रहे। अब सवाल यह है कि एक दिन पहले ही वह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यक्रम में हाजिर थे। वहीं एक दिन बाद ही कांग्रेस की बैठक से किनारा कर गए। शशि थरूर ने प्रधानमंत्री मोदी की तारीफ करते हुए इन्स्टाग्राम पर पोस्ट भी किया था। पीएम मोदी की तारीफ को लेकर कांग्रेस के अन्य नेताओं ने उन्हें निशाने पर भी लिया था। थरूर ने सफाई देते हुए बताया कि वह केरल में थे। वह 90 वर्षीय मां के साथ थे और इसलिए बैठक में शामिल नहीं हो सके। इस बैठख में कांग्रेस के

महासचिव केसी वेणुगोपाल भी शामिल नहीं हो पाए थे। वह स्थानीय चुनाव प्रचार में व्यस्त थे। कांग्रेस नेता ने कहा कि असल समस्या यह है कि वह देश को ठीक से समझते ही नहीं हैं। उन्हें यही लगता है कि बीजेपी की नीतियां बहुत अच्छी हैं। अगर ऐसा ही है तो वह कांग्रेस में क्यों हैं? वह दोहरा रवैया अपना रहे हैं। कांग्रेस की प्रवक्ता सुप्रिया श्रीनेत ने कहा कि प्रधानमंत्री के भाषण में कोई प्रशंसा करने वाली बात नहीं थी इसके बाद भी शशि थरूर को अच्छी लगी।

ऑस्ट्रियन इंफ्लूएंसर की हत्या

एक्स ने शव को सूटकेस में भरकर जंगल में फेंका; कबूल किया जुर्म

स्लोवेनिया , एजेंसी। ऑस्ट्रिया की एक जानी मानी हस्ती पिछले काफी दिनों से लापता थी। परिजनों की शिकायत पर जब पुलिस ने छानबीन शुरू की, तो उसकी लाश स्लोवेनिया के जंगलों में सूटकेस के अंदर मिली। इस घटना से पूरे यूरोप में सनसनी फैल गई है।

लाश की पहचान ऑस्ट्रिया की मशहूर इंफ्लूएंसर स्टेफनी पीपर के रूप में हुई है। 31 वर्षीय स्टेफनी की मौत से उनके फैंस को भी गहरा धक्का लगा है। इस हत्याकांड को स्टेफनी के पूर्व प्रेमी ने अंजाम दिया।

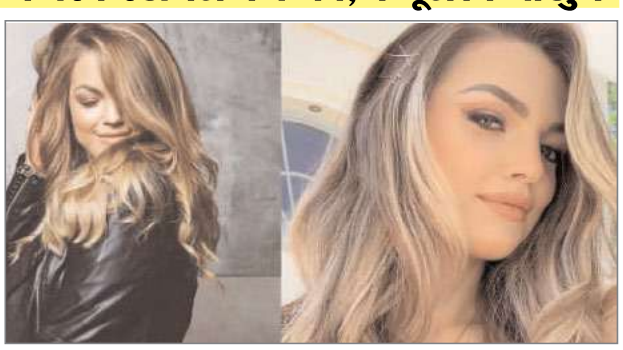

घर से हुई थी लापता: पुलिस के अनुसार, 23 नवंबर को एक पार्टी से घर लौटने के बाद स्टेफनी अचानक गायब हो गई थीं। 23 नवंबर की रात स्टेफनी ने अपनी एक दोस्त को मैसेज करते हुए बताया था कि वो सुरक्षित घर पहुंच चुकी हैं। इसके कुछ देर बाद ही स्टेफनी ने दूसरा मैसेज किया कि शायद उनके घर की सीढ़ियों में कोई छिपा है। स्टेफनी के पड़ोसियों ने बताया कि देर रात उनके घर से लड़ाई-झगड़े की आवाज आ रही थी। लोगों ने स्टेफनी के पूर्व प्रेमी को भी बिल्डिंग में देखा था। स्टेफनी के परिजन भी लाख कोशिशों के बाद उन तक नहीं पहुंच पा रहे थे। पुलिस ने जब स्टेफनी के पूर्व प्रेमी की तलाश शुरू की, तो उसे स्लोवानिया में एक जलती हुई कार के पास से पकड़ा गया। पुलिस के अनुसार, कई बार ऑस्ट्रिया से स्लोवानिया जाने के कारण 24 नवंबर को उसकी कार में आग लग गई। यह कार ऑस्ट्रिया और स्लोवानिया की सीमा पर मौजूद एक कैसीनो की पार्किंग में खड़ी थी। पुलिस ने जब आरोपी को पकड़कर पूछताछ शुरू की, तो उसने अपना गुनाह कबूल कर लिया। उसने पुलिस को बताया कि स्टीफेन की हत्या करने के बाद उनके शव को सूटकेस में भरकर स्लोवेन फॉरेस्ट में फेंक दिया है। पुलिस ने आरोपी के 2 अन्य संबंधियों को भी हिरासत में लिया है।

रूबेन्स की खोई कृति ने मचाया धमाल

ईसा मसीह की दुर्लभ पेंटिंग रिकॉर्ड कीमत पर नीलाम!

रूबेन्स , एजेंसी। बारोक काल के महान चित्रकार पीटर पॉल रूबेन्स की एक लंबे समय से खोई हुई पेंटिंग रविवार को वर्सलीज में हुई नीलामी में 27 लाख डॉलर में बिकी। यह पेंटिंग चार सदी से अधिक समय बाद हाल में पेरिस के एक निजी टाउनहाउस में मिली थी। इसमें ईसा मसीह को सूली पर चढ़ाए जाने का दृश्य दर्शाया गया है। संग्रह का हिस्सा थी और शुरू में यह माना जा रहा था कि यह उस समय मौजूद रूबेन्स की कई कार्यशालाओं में से किसी एक में बनाई गई कृति है। नीलामीकर्ता जीन-पियरे ओसेना ने बताया, ''मुझे इस पेंटिंग को देखकर तुरंत एक एहसास हुआ और मैंने इसे प्रमाणित करवाने के लिए हर संभव प्रयास किया और अंत में हम इसे एंटवर्प स्थित रूबेन्स समिति 'रुबेनियानम से प्रमाणित करवाने में सफल हुए। रूबेन्स पर शोध के लिए प्रसिद्ध विशेषज्ञ निल्स ब्यूट्नर ने नीलामी से पहले बताया कि मशहूर कलाकार ने सूली पर चढ़ाए

जाने के दृश्य अक्सर चित्रित किए लेकिन ''उन्होंने बहुत कम अवसरों पर सूली पर मृत अवस्था में ईसा मसीह को दर्शाया। उन्होंने कहा, ''यह एकमात्र ऐसी पेंटिंग है जिसमें ईसा मसीह के पार्श्व-घाव से रक्त और पानी बहते हुए दिखाया गया है और रूबेन्स ने इसे सिर्फ एक बार बनाया था। ओसेना नीलामी हाउस ने बताया कि वैज्ञानिक विश्लेषण के बाद इस पेंटिंग की प्रामाणिकता और उत्पत्ति की पुष्टि की गई। कला विशेषज्ञ एरिक टुर्किन ने कहा कि यह पेंटिंग 1600 के शुरुआती दशक में लगभग गायब हो गई थी। ऐसी जानकारी है कि 19वीं सदी के फ्रांसीसी क्लासिक चित्रकार विलियम बूगुएरो के पास यह पेंटिंग थी, जिसके बाद यह परिवार के पास पीढ़ियों तक रही।

शोक की जगह प्रिया कपूर का ध्यान 30 हजार करोड़ की संपत्ति पर था; संजय कपूर की मां

नई दिल्ली, एजेंसी।

दिवंगत उद्योगपति संजय कपूर के निधन के बाद जारी संपत्ति विवाद थमने का नाम नहीं ले रहा है। करिश्मा कपूर के बच्चों के बाद अब संजय की मां ने दूसरी पत्नी प्रिया कपूर पर संगीन आरोप लगाए हैं। संजय कपूर की मां रानी कपूर ने दिल्ली हाई कोर्ट को बताया कि प्रिया ने पति की मौत का शोक मनाने के बजाय, उनकी ?30,000 करोड़ की संपत्ति पर नियंत्रण हासिल करने के लिए हर संभव कदम उठाया। यह मामला संजय कपूर की अभिनेत्री करिश्मा कपूर के साथ हुई शादी से हुए बच्चों की ओर से दायर की गई कानूनी चुनौती से संबंधित है।

संजय कपूर की मां रानी कपूर ने अपने वकील के माध्यम से चिंता व्यक्त की कि उन्हें बेटे की वसीयत के बारे में कभी सूचित नहीं किया गया। रानी कपूर ने कहा कि वसीयत में उनका कोई उल्लेख नहीं है, जबकि संजय ने यह स्वीकार किया था कि उन्हें सब कुछ मां से मिला था। रानी कपूर का प्रतिनिधित्व कर रहे वरिष्ठ अधिवक्ता वैभव गग्गर ने अदालत को बताया कि संजय और प्रिया कपूर के बीच वैवाहिक समस्याएं मई 2023 में शुरू हो गई थीं, जिसके कारण उनके बीच बार-बार झगड़े होते थे। याचिका में कहा गया है कि यह अत्यधिक असंभव और अविश्वसनीय था कि संजय प्रिया को अपनी व्यक्तिगत संपत्ति का एकमात्र लाभार्थी बनाएंगे। याचिका में यह भी जोड़ा गया कि दिवंगत संजय अपने सभी बच्चों,अपनी मां और कपूर परिवार के अन्य सदस्यों से गहरा बंधन और समान स्नेह करते थे। गग्गर ने आरोप लगाया कि प्रिया कपूर ने शोक मनाने के बजाय संपत्ति पर नियंत्रण को प्राथमिकता दी और अदालत में प्रस्तुत की गई सूची में संजय कपूर से संबंधित महत्वपूर्ण संपत्ति को छिपाया, जिसमें पेंटिंग और बैंक बैलेंस शामिल हैं। अदालत करिश्मा कपूर के बच्चों की दायर एक अंतरिम निषेधाज्ञा आवेदन पर भी विचार कर रही है।

धमकी से डरी लड़की ने घर बेचकर दिए 21 लाख रूपये

नई दिल्ली, एजेंसी।

गुजरात के पाटन से डिजिटल अरेस्ट का बेहद चौंकाने वाला मामला सामने आया है, जहां एक भाई-बहन ने साइबर ठगों के डर से अपना घर तक बेच दिया। ठगों ने उन्हें पूरे सात दिन तक वीडियो कॉल पर नजरबंद रखा और 21 लाख रुपये लूट लिए। पुलिस ने अब इस मामले में केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

31 अक्टूबर को लड़की के फोन पर कॉल आई। कॉल करने वाले ने खुद को मुंबई पुलिस का सिपाही बताया। उसने कहा कि लड़की के आधार से जुड़ा एक मोबाइल नंबर वेश्यावृत्ति और मनी लॉन्ड्रिंग में इस्तेमाल हो रहा है। लड़की ने इनकार किया तो कॉल को कथित सीनियर अधिकारी को ट्रांसफर कर दिया गया।

साइबर ठगों ने दोनों को फोन पर धमकाया। ठगों ने दोनों भाई-बहन को सख्त हिदायत दी कि एक ही जगह बैठे रहो, फोन का कैमरा हर समय चालू रखो। किसी से बात मत करो, वरना तुरंत गिरफ्तार कर लेंगे। ठगों ने फर्जी गिरफ्तारी वारंट, बैंक अकाउंट फ्रीज करने के ऑर्डर और लड़की के नाम का सहमति पत्र भी भेजा गया। डर इतना था कि दोनों हिल नहीं पाए।

ठगों ने कहा कि उनके नाम से 3.16 करोड़ रुपये का काला धन बरामद हुआ है। इसे साफ करने के लिए वेरिफिकेशन के नाम पर पैसे ट्रांसफर करने पड़ेंगे। सात दिनों में भाई-बहन ने अपनी सारी सेविंग निकाल दी। सैलरी के पैसे भेज दिए और इतना ही नहीं घर बेचा और 11 लाख रुपये टोकन के रूप में लिए। 5 नवंबर तक कुल 20.93 लाख रुपये अलग-अलग अकाउंट में ट्रांसफर हो चुके थे। ठगों ने कहा था कि पैसे आने के बाद शाम तक बेगुनाही का सर्टिफिकेट मिल जाएगा। लेकिन कोई सर्टिफिकेट नहीं आया। अगले दिन ठगों ने घर की रजिस्ट्री मांगी। इसके बाद उनका नंबर बंद हो गया और वॉट्सऐप अकाउंट गायब हो गया।

दिल्ली-देहरादून एक्सप्रेसवे ट्रायल के लिए खुला

एक महीने तक फ्री रहेगा टोल

नई दिल्ली, एजेंसी।

दिल्ली से देहरादून आने-जाने वालों के लिए बड़ी राहत की खबर है। दिल्ली-देहरादून एक्सप्रेसवे का पहला हिस्सा सोमवार से आम लोगों के लिए खुल गया है। अभी 32 किमी लंबा हिस्सा ट्रायल के लिए शुरू हुआ है, जो दिल्ली के अक्षरधाम से उत्तर प्रदेश के बागपत तक जाता है। राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण ने बताया कि अगले एक महीने तक इस हिस्से पर कोई टोल नहीं लगेगा। इस रूट से दिल्ली-गाजियाबाद-नोएडा की तरफ जाने वाली गाड़ियों का दबाव कम होगा और पुराने रास्तों पर जाम से काफी राहत मिलेगी। कुल 210 किमी लंबा यह एक्सप्रेसवे चार चरणों में बन रहा है। पूरा होने के बाद दिल्ली से देहरादून का सफर सिर्फ ढाई घंटे में पूरा हो जाएगा। अभी जो समय लगता है, वह करीब 6 घंटे है। पहले दिसंबर 2024 में पूरा खोलने का लक्ष्य था, लेकिन अब फरवरी 2026 का नया टारगेट रखा गया है। ये सभी जगह साफ-सुथरे वॉशरूम, पीने का पानी, फर्स्ट-एड और सानिक पार्किंग से लैस होंगी। अधिकारियों का कहना है कि बागपत तक का हिस्सा पिछले छह महीने से तैयार था, लेकिन पूरा एक्सप्रेसवे एक साथ खोलने की योजना के कारण इसे रोका गया था।

दिल्ली में वाहनों का धुआं बना सांस का दुश्मन?

● वाहनों का धुआं पलूशन को और मजबूत बना रहा है

नई दिल्ली, एजेंसी।

दिल्ली-एनसीआर में प्रदूषण नासूर बनता जा रहा है। अब इस पर सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरनमेंट की ओर से की गई एक स्टडी में पता चला है कि सड़कों पर दौड़ने वाले वाहनों का धुआं पलूशन को और मजबूत बना रहा है। दिल्ली-एनसीआर में नाइट्रोजन डाइऑक्साइड और कार्बन मोनोऑक्साइड जैसी गैसों के स्तर में काफी वृद्धि देखी गई है। यह वृद्धि वाहनों के उत्सर्जन के कारण हो रही है, जो सर्दियों की उथली सीमा परतों के नीचे फंस जाते हैं।

विशेषज्ञों का कहना है कि ये निष्कर्ष स्पष्ट रूप से बताते हैं कि दिल्ली में प्रदूषण के दैनिक उछाल पर यातायात-संबंधी उत्सर्जन का बहुत गहरा असर होता है। सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरनमेंट के जारी किए गए इस विश्लेषण में कुछ महत्वपूर्ण बातें सामने आईं। औसत प्रदूषणः हालांकि, औसत प्रदूषण स्तर में ज्यादा बदलाव नहीं आया है। यह अध्ययन 1 अक्टूबर से 15 नवंबर की अवधि को कवर करता है और इसमें पाया गया कि पीएम2.5 (बारीक कण) का स्तर सुबह (7-10 बजे) और शाम (6-9 बजे) के घंटों के दौरान एनओ2 के स्तर के साथ लगभग समान रूप से ऊपर-नीचे होता है। यह रुझान इस बात का

स्पष्ट संकेत है कि यातायात के उत्सर्जन और भीड़भाड़ का प्रदूषण पर कितना अधिक प्रभाव पड़ता है। अध्ययन के 59 दिनों में से 30 से अधिक दिनों में, आधे से अधिक (22) निगरानी स्टेशनों ने आठ घंटे के मानक से ऊपर सीओ के स्तर को रिकॉर्ड किया। यह लगातार यातायात-संबंधी उत्सर्जन की ओर इशारा करता है। दिल्ली में कुल 40 वायु गुणवत्ता स्टेशन हैं। इसके बाद जहांगीरपुरी और नॉर्थ कैंपस रहे, जिनमें से प्रत्येक ने 50 दिन तक उल्लंघन दर्ज किया। विशेषज्ञों ने कहा कि प्रदूषकों में पाया गया यह समकालिक पैटर्न दर्शाता है कि प्रदूषण के दैनिक कण उछाल को यातायात से उत्पन्न उत्सर्जन द्वारा करीब से बल मिलता है। यह विशेष रूप से ऐसे समय में महत्वपूर्ण है जब सरकारी कार्रवाई और जन ध्यान पराली जलाने जैसे अन्य कारकों की ओर अधिक केंद्रित होता दिख रहा है। सीएसई में अनुसंधान और पैरवी की कार्यकारी निदेशक, अनुमिता रॉय चौधरी ने कहा कि प्रदूषकों का यह मिश्रण हवा को सांस लेने के लिए अधिक जहरीला भी बना देता है। फिर भी, हर सर्दी में, प्रदूषण नियंत्रण के प्रयासों में धूल नियंत्रण उपायों का बोलबाला रहता है, जबकि वाहनों, उद्योगों, कचरे और ठोस ईंधन जलाने जैसे कारकों पर कमजोर कार्रवाई की जाती है।

कंडोम और गर्भनिरोधकों पर देना होगा भारी-भरकम टैक्स, जन्म दर बढ़ाने के लिए चीन की नई तरकीब

बीजिंग, एजेंसी। चीन में गिरता जन्म दर सरकार के लिए बड़ी सिरदर्दी बनी हुई है। कई तरह के उपायों के बाद चीन ने हाल ही में जन्म दर बढ़ाने के लिए एक नई तरकीब निकली है। अब चीन कंडोम और इस तरह के दूसरे गर्भनिरोधक प्रोडक्ट्स पर भारी भरकम टैक्स लगाएगा। नया बदलाव जनवरी से लागू होगा। गौरतलब है कि पिछले 3 साल से देश की आबादी लगातार घट रही है। 2024 में सिर्फ 9.54 लाख बच्चों का जन्म हुआ, जबकि दस साल पहले यह संख्या 18.8 लाख थी।

जानकारी के मुताबिक नए वैल्यू एडेड टैक्स कानून के तहत चीन में अब कंडोम समेत सभी गर्भनिरोधक उपकरणों और दवाओं पर 13 फीसदी टैक्स देना पड़ेगा। इससे पहले 1993 से अब तक इन प्रोडक्ट्स पर कोई वीएटी नहीं लगता था। तब चीन में सख्त वन-चाइल्ड पॉलिसी लागू थी और सरकार ही परिवार नियोजन को बढ़ावा देती थी।

दूसरी तरफ, नए टैक्स नियम में माता-पिता बनने वालों को कई राहतें भी दी गई हैं। अब चाइल्ड केयर सर्विस, डे-केयर, प्री-स्कूल, एल्डर केयर, डिसेबिलिटी सर्विस और मैरेज सर्विस पर टैक्स नहीं लगेगा। चीन इससे पहले इस तरह की कई नीतियां लागू कर चुका है। मां बाप को कैश देने से लेकर चाइल्ड केयर और उनके लिए लंबी छुट्टियों की भी घोषणा की गई है। यहां तक कि सरकार ने उन अबॉर्शन को कम करने की गाइडलाइन भी जारी की है जो डॉक्टर की नजर में जरूरी नहीं हैं। यह इसीलिए अहम है कि क्योंकि चीन के वन-चाइल्ड सिस्टम के दौर में जबरन अबॉर्शन और नसबंदी काफी आम थी।

हालांकि विशेषज्ञों का कहना है कि वीएटी हटाना सिर्फ एक प्रतीकात्मक कदम है। इससे जन्म दर पर खास असर नहीं पड़ेगा। यह सिर्फ समाज में बच्चे पैदा करने को लेकर माहौल बदलने की कोशिश है। विशेषज्ञों के मुताबिक सबसे बड़ी दिक्कत यह है कि चीन दुनिया में बच्चों को पालने के लिए सबसे महंगे देशों में गिना जाता है। बीजिंग स्थित यूवा पॉपुलेशन रिसर्च इंस्टीट्यूट की 2024 की रिपोर्ट के मुताबिक एक बच्चे को 18 साल तक पालने में करीब 5.38 लाख युआन करीब 76 हजार डॉलर) खर्च होता है। वहीं युवा कमजोर अर्थव्यवस्था और अस्थिर नौकरी को देखते हुए परिवार शुरू करने से बच रहे हैं। कई युवा अपनी नौकरी और भविष्य पर निवेश करना ज्यादा जरूरी मान रहे हैं।

ब्रिटेन की एमपी को भी बांग्लादेशी कोर्ट ने सुना दी सजा

ढाका , एजेंसी।

बांग्लादेश की अदालत ने शेख हसीना और उनके परिवार के कुछ लोगों को एक बार फिर भ्रष्टाचार के मामले में दोषी ठहराते हुए सजा सुना दी है। इस मामले में शेख हसीना को पांच साल कैद की सजा और उनकी बहन रेहाना को सात साल और भांजी ट्यूलिप सिद्दीकी को दो साल कैद की सजा सुनाई गई है। ट्यूलिप सिद्दीक ब्रिटेन की सांसद हैं। इन्हीं आरोपों के चलते ट्यूलिप को 2024 में मंत्रिपद से इस्तीफा देना पड़ गया था। बता दें कि ट्यूलिप सिद्दीकी की पार्टी की ही ब्रिटेन में सरकार है। ऐसे में उनपर बांग्लादेशी कोर्ट की ओर से आरोप तय करने और सजा सुनाए जाने को लेकर हड़कंप मच गया है। ट्यूलिप का कहना है कि बांग्लादेश केवल बदले की कार्रवाई कर रहा है। ट्यूलिप को लेकर ब्रिटेन के वकीलों ने बांग्लादेश की सरकार को पत्र भी लिखा था और कहा था कि जिस तरह से बेबुनियाद तरीके से ट्यूलिप के खिलाफ केस चलाया जा रहा है, वह गलत है। सिद्दिक (43) ने इस वर्ष की शुरुआत में ब्रिटिश प्रधानमंत्री केअर स्टार्मर के मंत्रिमंडल में वित्त मंत्री के पद से इस्तीफा दे दिया था, क्योंकि उनके परिवार के खिलाफ भ्रष्टाचार के आरोप दुनियाभर में सुर्खियों में थे। बांग्लादेश के भ्रष्टाचार निरोधक आयोग (एसीसी) द्वारा उनके और उनके परिवार के खिलाफ ढाका में मुकदमा चलाया जा रहा था।

वर्ल्ड क्लास एयरपोर्ट और मॉडर्न स्टेशन से बदली रामनगरी की तस्वीर... अयोध्या अब हाईटेक सुविधाओं के साथ यात्रा के लिए तैयार

राम मंदिर निर्माण के बाद अयोध्या में आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या लगातार बढ़ रही है। इसी वजह से शहर में बड़े पैमाने पर आधुनिक परिवहन सुविधाओं का विकास किया गया है। अब अयोध्या पहुंचना पहले की तुलना में कहीं ज्यादा आरामदायक, तेज और सुविधाजनक बन गया है।चाहे यात्री हवाई मार्ग, रेल या सड़क से आएं हर रूट अब पूरी तरह आधुनिक स्वरूप में तैयार है। आइए इन सुविधाओं पर नजर डालते हैं, ताकि अयोध्या जाने की योजना बनाते समय यात्रा से जुड़ी कोई चिंता न रहे।

महर्षि वाल्मीकि अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा

अयोध्या का महर्षि वाल्मीकि अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा अब शहर की नई पहचान बन चुका है। करीब 6,500 वर्ग मीटर में फैला इसका विशाल टर्मिनल श्रीराम मंदिर की वास्तुकला से प्रेरित है। यह एयरपोर्ट सालाना 60 लाख यात्रियों को संभालने की क्षमता रखता है, जिससे यह प्रदेश के प्रमुख हवाई अड्डों में शामिल हो गया है। बड़े विमानों की लैंडिंग और अंतरराष्ट्रीय उड़ानों की सुविधा ने विदेश से आने वाले यात्रियों के लिए यात्रा को और आसान बना दिया है। दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु के साथ-साथ नेपाल और अन्य पड़ोसी देशों से कनेक्टिविटी भी बेहतर हुई है।

अयोध्या धाम जंक्शन

ट्रेन से यात्रा करने वालों के लिए अयोध्या में अब बिल्कुल नया अनुभव मिलता है। 240 करोड़ रुपये से अधिक की लागत से तैयार अयोध्या धाम जंक्शन तीन मंजिला, आधुनिक और IGBC प्रमाणित ग्रीन स्टेशन है। स्टेशन पर लिफ्ट, एस्केलेटर, चाइल्ड केयर रूम, क्लॉक रूम, वेटिंग रूम और स्वच्छ प्लेटफॉर्म की सुविधाएं मौजूद हैं। लगभग 2300 करोड़ रुपये की तीन नई रेल परियोजनाओं ने दिल्ली, लखनऊ, वाराणसी और गोरखपुर से कनेक्टिविटी को और मजबूत किया है। भीड़ के बावजूद यात्रियों को अब व्यवस्थित और सहज यात्रा का अनुभव होता है।

आधुनिक सड़कें

अयोध्या की सड़कें अब केवल आकर्षक ही नहीं, बल्कि बेहद व्यावहारिक भी हैं। रामपथ, भक्तिपथ, धर्मपथ और श्रीराम जन्मभूमि पथ जैसे मार्गों ने मंदिर तक पहुंचने का समय काफी कम कर दिया है। लखनऊ, प्रयागराज, वाराणसी और दिल्ली से सड़क मार्ग द्वारा अयोध्या पहुंचना अब काफी सुगम हो गया है। UPSRTC की 24×7 बस सेवा ने बजट यात्रियों के लिए सफर को और सरल बना दिया है। चौड़ी सड़कें त्योहारों और खास अवसरों के दौरान ट्रैफिक को बेहतर ढंग से संभालती हैं।

ग्रीनफील्ड बाईपास

अयोध्या की तेज यात्रा का प्रमुख आकर्षण 67.57 किलोमीटर लंबा ग्रीनफील्ड बाईपास है। यह रूट शहर को लखनऊ, बस्ती और गोंडा से हाई-स्पीड नेटवर्क से जोड़ता है। इस मार्ग के बनने से यात्रा समय में 66.67% की कमी दर्ज हुई है, जबकि औसत गति 250% तक बढ़ी है। यह हाईवे शहर के पर्यटन को नई ऊंचाई देने में अहम भूमिका निभा रहा है।

जन्मदिन की अग्रिम शुभ सूचना

"रंजीत टाइम्स" में अब आप अपने या अपने प्रियजनों का जन्मदिन एक दिन पहले ही निशुल्क प्रकाशित करवा सकते हैं!

बस हमें भेजिएः 1 जन्मदिन मनाने वाले की फोटो

2 उसका पूरा नाम- 3 बधाई देने वाले का नाम जन्मदिन के एक दिन पहले ही विज्ञापन भेज दें, ताकि समय रहते प्रकाशित किया जा सके।

भेजने का नंबर (Aditya): 8224951278

रंजीत टाइम्स में आपका विज्ञापन पूरी तरह मुफ्त प्रकाशित किया जाएगा! अपने जज़बातों को शब्द दें – सिर्फ रंजीत टाइम्स के साथ। टीम रंजीत टाइम्स- "आपका अपना अख़बार, आपकी आवाज़"

रणजीत टाइम्स

दैनिक रणजीत टाइम्स

जिला एवं तहसील स्तर पर एजेंसी देना है

अपना बायोडाटा सम्पूर्ण विवरण के साथ हमें प्रेषित करें। सम्पर्क करें

8224951278 :: 9827068888

किसान आंदोलन ज्ञापन के बाद हुआ स्थगित, नाराज किसान समझाइश के बाद हटे

रणजीत सिंह ठाकुर

खरगोन। राऊ खलघाट फोरलेन पर राष्ट्रीय किसान मजदूर महासंघ मालवा निमाड़ के आव्हान पर 1 दिसंबर को सुबह से अपनी मांगों को लेकर चल रहे धरना प्रदर्शन को देर रात जिला प्रशासन को अपनी विभिन्न मांगों को लेकर ज्ञापन सौंप कर कलेक्टर के आश्वासन के बाद धरने को स्थगित किया गया। हालांकि संगठन के आंदोलन स्थगित करने से कुछ किसान नाराज हो गए और सड़क पर बैठे रहे जिसे पुलिस द्वारा समझाइश देकर देर रात यातायात को सुचारू रूप से चालू किया गया। धार जिला कलेक्टर ने आंदोलन स्थगित के बाद किसानों को धन्यवाद दिया और आश्वासन दिया हैं कि जल्द ही किसानों के प्रतिनिधि मंडल को दिल्ली भेज कर केंद्र सरकार के सामने उनकी मांगे राखी जाएगी। आंदोलन स्थगित करने के बाद नाराज किसानों को खुद एसपी ने समझाइश देकर राष्ट्रीय राजमार्ग को सुचारू रूप से चालू करवाया गया हैं। एसपी मयंक अवस्थी ने बताया कि, पूरे दिन हुए घटनाओं की जांच की जाएगी और वीडियो फोटोज देखने के बाद शिकायत के आधार पर कार्यवाही की जाएगी।फिलहाल आंदोलनकारियों द्वारा आंदोल को स्थगित कर दिया गया हैं और नाराज किसानों को समझाइश देकर यातायात सुचारू रूप से चालू करवाया गया हैं।

इनका कहना है

राष्ट्रीय किसान संघ मालवा निमाड़ के आह्वान पर किसानों के द्वारा जो धरना प्रदर्शन जारी था वो रात को स्थगित हो गया है, किसान भाईयों की जो मांगे केंद्र सरकार से थी उन मांगों से संबंधित ज्ञापन किसानों ने सौंपा है माननीय मुख्यमंत्री जी ने किसानों की हर समस्याओं का समाधान करने के निर्देश दिए है किसान समझाइश के बाद धरना स्थगित कर अपने अपने गंतव्य को लौट गए हैं।

प्रियंक मिश्र कलेक्टर धार

पराली जलाने पर अब नहीं होनी चाहिए राजनीति

● एयर पॉल्यूशन पर सुप्रीम सख्ती ,सुना दी खरी-खरी ● सीजेआई सूर्यकांत बोले- हम चुप नहीं बैठ सकते

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में एयर पॉल्यूशन के मुद्दे पर सुनवाई करते हुए दो टूक कहा कि परानी जलाने पर राजनीति नहीं होनी चाहिए। हम पराली जलाने को लेकर टिप्पणी नहीं करना चाहते। चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया सूर्यकांत की अध्यक्षता वाली बेंच ने कहा कि दिल्ली में खराब एयर क्वालिटी और पॉल्यूशन के मुद्दे को हर साल आने वाली एक रस्म की तरह नहीं देखा जा सकता। दिल्ली में प्रदूषण के मामले को अक्टूबर में बस लिस्ट करके नहीं छोड़ा जा सकता, हम इसकी नियमित सुनवाई करेंगे। हमने यह भी देखा है कि जब इस मामले की सुनवाई हुई तो हवा की गुणवत्ता में सुधार देखा गया है। सीजेआई सूर्यकांत ने वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग और केंद्र सरकार से कहा कि हम में से कोई भी खाली नहीं बैठ सकता।

धूल और धुआं बने अब सबसे बड़ी मुसीबत

● प्रदूषण को लेकर पीएमओ सख्त,तैयार किया ऐक्शन प्लान

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली और मुंबई जैसे देश के प्रमुख शहरों में प्रदूषण का स्तर इतने खतरनाक स्तर तक पहुंच गया है कि लोगों का सांस लेना दूभर हो गया है। वहीं बुजुर्गों और बच्चों के लिए यह और भी खतरनाक साबित हो रहा है। बीते दिनों नेशनल ग्रीन ट्राइब्यूनल को बताया गया था कि अब तक प्रदूषण नियंत्रण के लिए जो भी कदम उठाए गए हैं वे पुराने आंकड़ों पर आधारित हैं। इसके बाद प्रधानमंत्री कार्यालय ने एयर क्वालिटी मैनेजमेंट और केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड को निर्देश दिए हैं कि पता लगाया जाए कि आखिर प्रदूषण के प्रमुख और बड़े स्रोत क्या हैं। प्रधानमंत्री कार्यालय ने कहा है कि पीएम लेवल बढ़ाने में धूल का भी बड़ा योगदान होता है। इसलिए शहरों और आसपास के ग्रामीण इलाकों की सड़कों को सुधारने का भी काम किया जाए जिससे कि वाहनों से उड़ने वाली धूल कम हो। इसके अलावा सड़क के किनार हरियाली बढ़ाई जाए जो कि प्रदूषण और धूल कड़ों को हवा के साथ घुलने से रोके। प्रधानमंत्री के प्रधान सचिव पीके मिश्रा ने अक्टूबर में हाई लेवल

टास्क फोर्स मीटिंग की थी। इसमें आठ विभागों के सचिव भी शामिल हुए थे जिनमें पर्यावरण एवं ऊर्जा, हाउसिंग और कृषि विभाग के अधिकारी शामिल थे। इसके अलावा दिल्ली, राजस्थान, हरियाणा, पंजाब और उत्तर प्रदेश के मुख्य सचिवों को भी बैठक में शामिल किया गया था।

नहीं अपलोड किया वक्फ संपत्ति का ब्यौरा तो होगी सजा

● 'उम्मीद' पोर्टल पर सुप्रीम कोर्ट ने नहीं बढ़ाई समय सीमा

नई दिल्ली (एजेंसी)। वक्फ की संपत्तियों की डीटेल उम्मीद पोर्टल पर अपलोड करने की समय सीमा बढ़ाने से सुप्रीम कोर्ट ने साफ तौर पर इनकार कर दिया है। सुप्रीम कोर्ट ने याचिकाकर्ताओं से कहा है कि वे संबंधित ट्राइब्यूनल में जाकर अपनी बात रखें। बता दें कि समय सीमा बढ़ाने वाली याचिकाओं में ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोल्ड और एआईएमआईएम नेता असदुद्दीन ओवैसी की याचिका भी शामिल थी। वक्फ संपत्तियों का ब्यौरा पोर्टल पर अपलोड करने के लिए 5 दिसंबर तक का समय दिया गया है। अगर ऐसा नहीं किया जाता है तो संबंधित व्यक्ति या संस्था को सजा भी हो सकती है। जस्टिस दीपांकर दत्ता और जस्टिस ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की पीठ ने कहा कि वक्फ कानून को अदालत दोबारा नहीं लिख सकती है बल्कि वक्फ अधिनियम में उपाय पहले से ही मौजूद हैं। सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने पहले ही कहा था कि हर मुतवल्ली ट्राइब्यूनल में जाकर मामले के आधार पर राहत का ले सकता है। कोर्ट ने उनकी इस बात को रेखांकित करते हुए समयसीम बढ़ाने से इनकार कर दिया।

विधानसभा में नगर पालिका संशोधन विधेयक पेश

● शीतकालीन सत्र में अतिवृष्टि से नुकसान पर हुई चर्चा

भोपाल। शीतकालीन सत्र के पहले दिन सोमवार को लंच के बाद विधानसभा में नियम 139 के अंतर्गत अतिवृष्टि से हुए नुकसान के प्रस्ताव पर चर्चा हो रही है। इस दौरान स्पीकर नरेंद्र सिंह तोमर ने नगर पालिका संशोधन विधेयक पेश करने को कहा। नगरीय विकास मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने विधेयक पेश किया। इस पर कल चर्चा होगी।

इससे पहले नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने कांग्रेसी विधायकों को श्री लाइन व्हिप जारी कर नियम 139 के तहत किसानों की समस्याओं पर चर्चा के दौरान सदन में उपस्थित रहने को कहा। मतदान की स्थिति में कांग्रेस विधायकों से सरकार के खिलाफ वोट करने को कहा गया है। सत्र की शुरुआत में छिंदवाड़ा में कफ सिरप पीने से बच्चों की मौत का मामला उठा। इंदौर के एमवाय अस्पताल में बच्चों को चूहों के कुतरने पर भी कांग्रेस ने सवाल उठाए।

भगवान श्रीकृष्ण जनतंत्र और गणतंत्र के नायक

● एमपी सीएम बोले-हर बच्चे के बस्ते में हो गीता ● मुख्यमंत्री डॉ. यादव बोले-श्रीकृष्णं वंदे जगद्गुरुम

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सोमवार को 3 दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव का शुभारंभ उज्जैन के दशहरा मैदान से किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने इस अवसर पर सभी को गीता जयंती की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि जगत के गुरु भगवान श्रीकृष्ण को हम सभी नमन करते हैं। कुरुक्षेत्र के युद्ध स्थल में मोहग्रस्त अर्जुन को भगवान श्री कृष्ण द्वारा दिये गये उपदेश को समझने व आत्मसात करने के लिए प्रदेश में गीता जयंती से अन्तर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। पवित्र नगरी उज्जैन ने हर काल, हर परिस्थिति और हर युग में अपने महत्व को बनाए रखा है। आज से लगभग 5 हजार वर्ष पूर्व भगवान श्री कृष्ण ने कंस का वध किया था, और उसके पश्चात उन्होंने उज्जैन के सांदीपनि आश्रम में आकर महर्षि सांदीपनि से विद्या प्राप्त की थी। सांदीपनि आश्रम में बिना किसी भेदभाव के सभी शिष्यों को एक समान विद्या-अध्ययन

करवाया जाता था। भगवान श्री कृष्ण ने जन्म से ही कई संकटों को पार करते हुए विकट परिस्थितियों में भी सहज रहकर संकटों का सामना करना हम सभी को सिखाया। कंस वध के पश्चात उन्होंने अपने नाना उग्रसेन को राज्य हस्तांतरित किया और स्वयं उज्जैन में शिक्षा ग्रहण करने के लिए आये। यहां से शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात पूरे विश्व को उनके व्यक्तित्व ने प्रभावित किया। वर्तमान में विद्या अध्ययन कर रहे सभी विद्यार्थियों को इससे प्रेरणा लेना चाहिए कि जीवन में शिक्षा का महत्व सर्वाधिक होता है। नई शिक्षा नीति के तहत श्री भगवतगीता को कुछ राज्यों के पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है और कई राज्यों ने इसे अपनी शिक्षा प्रणाली का हिस्सा बनाने के लिए कदम उठाए हैं। इसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों को बढ़ावा देना है।

श्रीकृष्ण ने सदैव हमें अन्याय के विरुद्ध लड़ना सिखाया है

मुख्मयंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण के गुरु महर्षि सांदीपनि ने उनके गुणों को पहचाना तथा अपना सम्पूर्ण ज्ञान उन्हें दिया। भगवान श्रीकृष्ण इसके पश्चात ही जगत गुरू बने। कर्मयोग का ज्ञान देते हुए उन्होंने सम्पूर्ण विश्व में धर्म की स्थापना की और जन-तंत्र के सबसे बड़े नायक बनें। कुरुक्षेत्र के युद्ध में श्रीकृष्ण की सेना को कौरवों की तरफ से युद्ध करना पड़ा था। युद्ध स्थल में विपरीत परिस्थितियों में भी डटकर संकट का सामना करने का संदेश हम सभी को श्रीकृष्ण ने दिया। श्रीकृष्ण ने सदैव हमें अन्याय के विरुद्ध लड़ना सिखाया है। भगवतगीता में जीवन का सार है। इससे बढ़कर कोई ग्रंथ नहीं है। भगवतगीता हमें जीवन में कठिन समय में भी अपने कर्तव्य को निरंतर करते रहना सिखाती है। श्री कृष्ण के उपदेश हमारे जीवन का मार्गदर्शन करते हैं।

मोहन सरकार का MSP पर बड़ा त्याग, कर्ज लेकर किसानों के दे रहे पैसा

भोपालः मध्य प्रदेश में किसानों का गेहूं और धान को समर्थन मूल्य पर खरीदना राज्य सरकार की जेब पर अब भारी पड़ रहा है. केन्द्र सरकार ने समर्थन मूल्य पर खरीदे जाने वाले गेहूं और धान पर दी जाने वाली राशि को घटा दिया है. इसकी वजह से राज्य सरकार को 1.59 लाख करोड़ का कर्ज लेना पड़ा है।

इसकी जानकारी विधानसभा के शीतकालीन सत्र में एक सवाल के जवाब में सरकार ने दी है. सरकार ने गेहूं और धान खरीदी पर पिछले 5 सालों में समर्थन मूल्य पर 410 रुपए की बढ़ोत्तरी तो की, लेकिन केन्द्र सरकार से प्रदेश सरकार को 6241 करोड़ रुपए कम मिले हैं। केन्द्र से कम मिल रही राशि- कांग्रेस विधायक बाला बच्चन द्वारा पूछे गए सवाल के जवाब में राज्य सरकार ने बताया कि केन्द्र सरकार से राज्य सरकार को पिछले 5 सालों में 70 हजार करोड़ रुपए की राशि ही मिली है, जबकि राज्य सरकार को गेहूं और धान का भुगतान करने के लिए 1 लाख 59 हजार 259 करोड़ रुपए चुकाने पड़े. केन्द्र से कम राशि मिलने की भरपाई करने के लिए राज्य सरकार को बैंकों से कर्ज लेना पड़ा है. खाद्य नागरिक आपूर्ति मंत्री गोविंद सिंह राजपूत ने बताया कि "अभी राज्य पर 68 हजार 348 करोड़ रुपए का कर्ज है, जबकि बैंकों को 25 हजार 340 करोड़ रुपए का ब्याज भी चुकाया गया है. साल 2021-22 में केन्द्र सरकार से 11946.44 करोड़ राशि मिली, जबकि राज्य से 34145 करोड़ का भुगतान किया गया. इस साल एमएसपी 1925 रुपए प्रति क्विंटल थी. साल 2022-23 में केन्द्र से 14420.62 करोड़ रुपए राशि मिली, जबकि राज्य सरकार ने 14642 करोड़ का भुगतान किया. इस साल न्यूनतम समर्थन मूल्य यानि एमएसपी 2015 रुपए प्रति क्विंटल थी। साल 2023-24 में केन्द्र से 9471.50 करोड़ रुपए राशि मिली, जबकि राज्य सरकार ने 24169 करोड़ का भुगतान किया. इस साल एमएसपी 2015 रुपए प्रति क्विंटल थी साल 2024-25 में केन्द्र से 16939.27 करोड़ रुपए राशि मिली, जबकि राज्य सरकार ने 21154 करोड़ का भुगतान किया. इस साल एमएसपी 2275 रुपए प्रति क्विंटल थी. साल 2025-26 में केन्द्र से 7000 करोड़ रुपए राशि मिली, जबकि राज्य सरकार ने 20205 करोड़ का भुगतान किया. इस साल एमएसपी 2425 रुपए प्रति क्विंटल थी. मध्य प्रदेश में उपार्जन और भंडारण का कार्य नागरिक आपूर्ति निगम और सहकारी विपणन संघ द्वारा किया जाता है. दोनों ही संस्थाओं पर भारी कर्ज का बोझ है. नागरिक आपूर्ति निगम पर 1 लाख 21 हजार 740 करोड़ का कर्ज है और इसके लिए 18930 करोड़ का ब्याज चुकाया गया है. जबकि सहकारी विपणन संघ पर 37513 करोड़ का कर्ज है और इसके लिए 5599 करोड़ का कर्ज चुकाया जा रहा है।